# Bihar Board Class 12th Hindi Book Solutions Chapter 4 छप्पय

प्रश्न 1.
नाभादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है? उनकी क्रम सूची बनाइए।
उत्तर-
नाभादास ने कबीर की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है

- कबीर की मति अति गंभीर और अंत:करा भक्तिरस से सरस था।
- वे जाति–पाँति एवं वर्णाश्रम का खंडन करते थे।।
- कबीर ने केवल भगवद्भक्ति को ही श्रेष्ठ माना है।
- भगवद्भक्ति के अतिरिक्त जितने धर्म हैं, उन सबको कबीर ने अधर्म कहा है।.
- सच्चे हृदय से सप्रेम भजन के बिना तप, योग, यज्ञ, दान, व्रत सभी को कबीर ने तुच्छ बताया।
- कबीर ने हिन्दू, मुसलमान दोनों को प्रमाण तथा सिद्धान्त की बातें सुनाई हैं।

प्रश्न 2.
'मुख देखी नाहीं भनी' का क्या अर्थ है? कबीर पर यह कैसे लागू होता है?
उत्तर-
कबीरदास सिद्धान्त की बात करते हैं। वे कहते हैं कि मुख को देखकर हिन्दू–मुसलमान होने का अनुमान नहीं लगाया जाता। वहीं उनके हित की बात बताते हैं कि भक्ति के द्वारा ही भवसागर से पार उतरा जा सकता है। वे सभी को भगवद्भक्ति का उपदेश देते हैं।

प्रश्न 3.
सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है?
उत्तर-
कवि ने सूर के काव्य की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है

- सूर के कवित्त को सुनकर सभी प्रशंसापूर्वक अपना सिर हिलाते हैं।
- सूर की कविता में बड़ी भारी नवीन युक्तियाँ, चमत्कार, चातुर्य, अनूठे अनुप्रास और वर्णों के यथार्थ की उपस्थिति है।
- कवित्त के प्रारंभ से अन्त तक सुन्दर प्रवाह दर्शनीय है।
- तुकों का अद्‌भुत अर्थ दिखाता है।
- सूरदास ने प्रभु (कृष्ण) का जन्म, कर्म, गुण, रूप सब दिव्य दृष्टि से देखकर अपनी रसना से उसे प्रकाशित किया।

प्रश्न 4.
अर्थ स्पष्ट करें
(क) सूर कवित्त सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै।

(ख) भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए।
उत्तर-
कवि कहता है कि ऐसा कवि कौन है जो सूरदास जी का कवित्त सुनकर प्रशंसापूर्वक अप... सीस न हिलाये।

(ख) कबीर का कहना है कि भक्ति के विमुख जितने भी धर्म हैं उन
सबको अधर्म कहा जाना चाहिए। अर्थात् प्रभुभक्ति या भगवद्भक्ति ही
सर्वश्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त सब व्यर्थ है।

प्रश्न 5.
'पक्षपात नहीं वचन सबहि के हित की भाषी।', इस पंक्ति में कबीर के किस गुण का परिचय दिया गया है?
उत्तर-
पक्षपात नहीं वचन सबहि के हित की भाषी' से दर्शाया गया है कि कबीर हिन्दू, मुसलमान, आर्य, अनार्य में कोई भेद नहीं रखते हैं अपितु सबके हित की बात करते हैं। वे सिद्धान्तवादी हैं और सिद्धान्तों को लेकर आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 6.
कविता में तुक का क्या महत्त्व है? इन छप्पयों के संदर्भ में स्पष्ट करें।
उत्तर-
कविता में 'तुक' का अर्थ अन्तिम वर्गों की आवृत्ति है। कविता के चरणों के अंत में वर्णों का आवृत्ति को 'तुक' कहते हैं। साधारणतः पाँच मात्राओं की 'तुक' उत्तम मानी गयी है।

संस्कृत छंदों में 'तुक' का महत्व नहीं था, किन्तु हिन्दी में तुक ही छन्द का प्राण है।

"छप्पय'–यह मात्रिक विषम और संयुक्त छंद है। इस छंद के छह चरण होते हैं इसलिए इसे 'छप्पय' कहते हैं।

प्रथम चार चरण रोला के और शेष दो चरण उल्लाला के प्रथम–द्वितीय और तृतीय–चतुर्थ के योग होते हैं। छप्पय में उल्लाला के सम–विषम (प्रथम–द्वितीय और तृतीय–चतुर्थ) चरणों का यह योग 15 + 13 = 28 मात्राओं वाला ही अधिक प्रचलित है। जैसे–

*भक्ति विमुख जो धर्म सु सब अधरमकरि गायो।*
*योग, यज्ञ, व्रत, दान, भजन बिनु, तुच्छ दिखाओ।*

प्रश्न 7.
'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है?
उत्तर-
कबीरदास महान क्रांतिकारी कवि थे। उन्होंने सदैव पाखंड का विरोध किया। भारतीय षड्दर्शन और वर्णाश्रम को ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वर्णाश्रम व्यवस्था का पोषक धर्म षडदर्शन। भारत के प्रसिद्ध छः दर्शन हिन्दुओं के लिए अनिवार्य थे। इनकी ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कबीर ने षड्दर्शन को बुराइयों की तीखी आलोचना की और उनके विचारों की और तनिक भी ध्यान नहीं दिया यानी कानों से सुनकर ग्रहण नहीं किया बल्कि उसके पाखंड की धज्जी–धज्जी उड़ा दी। कबीर ने जनमानस को भी षड्दर्शन द्वारा पोषित. वर्णाश्रम की बुराइयों की ओर सबका ध्यान किया और उसके विचारों को मानने का प्रबल विरोधी किया।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 8.
कबीर ने भक्ति को कितना महत्व दिया?
उत्तर-
कबीर ने अपनी सबदी, साख और रमैनी द्वारा धर्म की सटीक व्याख्या प्रस्तुत की। लोक जगत में परिव्याप्त पाखंड व्याभिचार, मूर्तिपूजा और जाति–पाति. छुआछूत का प्रबल विरोध किया। उन्होंने योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन की नदी या उसके समक्ष उपस्थित किया।

कबीर ने भक्ति में पाखंडवादी विचारों की जमकर खिल्लियाँ उड़ायी और मानव–मानव के बीच समन्वयवादी संस्कृति की स्थापना की। लोगों के बीच भक्ति के सही स्वरूप की व्याख्या की। भक्ति की पवित्र धारा को बहाने उसे अनवरत गतिमय रहने में कबीर ने अपने प्रखर विचारों से उसे बल दिया। उन्होंने विधर्मियों की आलोचना की। भक्ति विमुख लोगों द्वारा भक्ति की परिभाषा गढ़ने की तीव्र आलोचना की। भक्ति के सत्य स्वरूप का उन्होंने उद्‌घाटन किया और जन–जन के बीच एकता, भाईचारा प्रेम की अजस्र गंगा बहायी। वे निर्गुण विचारधारा के तेजस्वी कवि थे। उन्होंने ईश्वर के निर्गुण स्वरूप का चित्रण किया उसकी सही व्याख्या की। सत्य स्वरूप का सबको दर्शन कराया।

## भाषा की बात

प्रश्न 1.
निम्नलिखित शब्दों में विपरीतार्थक शब्द लिखें तुच्छ, हित, पक्षपात, गुण, उक्ति
उत्तर-

- शब्द – विपरीतार्थक
- तुच्छ – महान्
- हित – अहित
- पक्षपात – विरोध, तटस्थता
- गुण – अवगुण
- उक्ति – अनुक्ति

प्रश्न 2.
वाक्य प्रयोग द्वारा इन शब्दों का लिंग निर्णय करें। वचन, मुख्य, यज्ञ,
अर्थ, कवि, बुद्धि।।
उत्तर-
वचन (स्त्री.)–हमें सदा सत्य वचन बोलनी चाहिए।।
मुख्य (पु.)–यह दुकान के मुख्य कार्यकर्ता है।
यज्ञ (पु.)–अब यज्ञ में पशुवलि नहीं दिया जाता।
अर्थ (पु.)–कविताओं का अर्थ सरल तथा सहज है।
कवि (पु.)–सूरदास एक अच्छे कवि हैं।
बुद्धि (स्त्री.)–उसकी बुद्धि कुशाग्र है।

प्रश्न 3.
विमल में 'वि' उपसर्ग है। इस उपसर्ग से पांच अन्य शब्द बनाएँ
उत्तर-
विमल, विमुक्त, विनाश, विशाल, विदग्ध, विहित।

प्रश्न 4.
पठित छप्पय से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें
उत्तर-
अनुप्रास, अस्थिति अति, अर्थ–अद्‌भूत, दिवि–दृष्टि, हृदय–हरि, कौन कवि, ये प्रथम छप्पय के अनुप्रास अलंकार में प्रयुक्त हैं। अतः ये अनुप्रास अलंकार हैं।

प्रश्न 5.
रसना (जिह्व) का पर्यायवाची शब्द लिखें।
उत्तर-
रसना–जीभ, जबान, जुबान, रसाला, रसिका, स्वादेन्द्रिय आदि।

https://www.evidyarthi.in/